बकरी पालन क्यों?

डॉ. राजकुमार बेरवाल (MVSc, Ph.D.)

प्रभारी अधिकारी एवं सहायक आचार्य

पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रसार एवं अनुसंधान केन्द्र

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर), फोन : 01509-221448

e-mail: vutrcsuratgarh.rajuvas@gmail.com

सम्पर्क सूत्र - डॉ. अनिल घोड़ेला, मो. 99280-22555

RSETI
Rural Self Employment Training Institutes
Powering Rural Entrepreneurship

ओ बी सी ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान

श्रीगंगानगर-335001 (राजस्थान)

प्रसार शिक्षा निदेशालय

राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

बीकानेर-334001 (राजस्थान)

Scanned with CamScanner

बकरी एक बहुउद्देश्यीय पशु है जो भूमिहीनों, लघु व सीमान्त किसानों की अर्थ व्यवस्था तथा पोषण में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। हमारे देश में गरीबी रेखा से नीचे रहने वालों की जनसंख्या करीब 45 करोड़ है। जिनका जीवन बहुत ही निम्न स्तर का है। उनका जीवन स्तर आसानी से ऊंचा करने के लिए बकरी पालन सर्वोत्तम उद्यम है। इस व्यवसाय में बहुत अधिक तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती है, लेकिन इसमें लाभ देने की अधिक क्षमता है। बकरी पालन एक ऐसा व्यवसाय है जिसे अधिकांश ग्रामीण लोग करते हैं। बकरी को उपलब्ध झाड़ियों और पेड़ों, वृक्षों पर अच्छी तरह से पाला जा सकता है। इसके विपरीत वातावरण में अच्छी तरह से पाला जा सकता है। जहाँ अन्य फसल नहीं उगाई जा सकती है। खेती के साथ बकरी एक अतिरिक्त आय के साधन के रूप में भी पाली जा सकती है। जहाँ जमीन अधिक उपजाऊ नहीं होती और नकदी फसलों की खेती नहीं की जा सकती है। वहाँ बकरी पालन एक उत्तम विकल्प होता है, क्योंकि इस पशु को सीमित चरागाह संसाधनों में भी आसानी से पाला जा सकता है और उपलब्ध सीमित चारा संसाधनों को उपभोग करके एक अच्छी पूंजी बन जाती है। इसे समय-समय पर विक्रय कर अपनी पारिवारिय जरूरतों को पूरा किया जा सकता है। बकरी को बेचने में कभी भी कहीं भी कोई समस्या नहीं है। यह प्राकृतिक आपदा के समय बीमा का काम करती है। जब सारी फसल नष्ट हो जाती है तब बकरी ही सहारा देती है। बकरी को धार्मिक रस्म तथा सामाजिक ऋण उतारने के लिए प्रयोग में लाते हैं। किसान अधिकतर एक फसली प्रणाली को अपनाकर खेती करते हैं इसमें अपनी सारी पूँजी व साहूकार से उधार लेकर उस फसल में लगा देते हैं, लेकिन कई बार प्राकृतिक आपदा, फसल का उचित मूल्य न मिलना आदि कारण से किसान कीपूरी आर्थिक स्थिति बिगड़ जाती है। इसलिए भारत सरकार कृषि के विविधीकरण पर जोर दे रही है, जिसमें किसान फसल के साथ-साथ पशुपालन, मधुमक्खी पालन, मछली पालन, मशरूम उत्पादन, बकरी पालन आदि उद्यमों में से दो या दो से अधिक व्यवसाय करने के लिए जोर दे रही है। क्योंकि यदि उद्यम में किसी तरह से हानि होती है तो दूसरा-तीसरा उद्यम किसान को मदद करता है और अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत रख सकता है। इसके लिए बकरी पालन एक उत्तम विकल्प होता है, जिसे कृषि के उप-उत्पादों पर भी पाला जा सकता है। बकरी कृषि के उप-उत्पाद को ही अच्छी तरह से उपयोग कर सकती है और उसके धन में परिवर्तित कर देती है। बकरी कृषि के विविधीकरण में बहुत उपयोगी सिद्ध होती है। अधिक मांस तथा कम उत्पादन के कारण बकरी का मांस हमारे घरेलू बाजार में सबसे महंगा है। इस कारण हमारा निर्यात न के बराबर है। इस वजह से बकरी पालन एक लाभकारी व्यवसाय बनता जा रहा है एवं बड़े पैमाने पर लोग इस क्षेत्र में पूंजी लगा रहे हैं। बकरी की विशेषता इस प्रकार है :-

बकरी पालन की विशेषताएं :

1. बकरी पालन के शुरूआत का खर्च बहुत ही मामूली होता है जिसे गरीब से गरीब भी कर सकता है।
2. बकरी का आकार छाटा एवं शान्त प्रवृत्ति की होने के कारण इसके आवास एवं प्रबन्धन की समस्याएं कम होती हैं। बकरी में बीमारियां अन्य पशुओं की अपेक्षा कम होती हैं। जिनका निवारण टीकाकरण करके आसानी से रोका या कम किया जा सकता है। टीकाकरण बहुत ही कम खर्च में हो जाता है।
3. बकरी एक मैत्रीभाव वाला पशु है जो आदमी के साथ मजे से रहना पसन्त करता है।
4. बकरी बहुजनन क्षमता वाला पशु है जो 10-12 माह में प्रजनन व जनन करने वाला है इसका ब्यात काल पांच माह का होता है और 16-17 माह की उम्रग में दूध देना शुरू कर देती है।
5. एक ब्यात में दो बच्चे देना सामान्य बात है तथा तीन-चार बच्चे भी होत हैं।
6. सूखा प्रभावित क्षेत्रों में बकरी में अन्य पशुओं की अपेक्षा नुकसान कम होने की संभावनाएँ रहती हैं।

Scanned with CamScanner

7. बड़े पशु के नर मादा के मूल्य में काफी अन्तर रहता है लेकिन बकरी में ऐसा नहीं है। नर मादा का मूल्य लगभग समान रहता है।

8. बकरी कटीली झाड़ियां, खरपतवार, फसल अवशेष तथा कृषि के उप-उत्पाद जो मनुष्य के लिए उपयुक्त नहीं पर अच्छी तरह फल-फूलती रहती हैं।

9. उचित प्रबन्धन से बकरी चरागाह को सुधारने तथा इसके रख-रखाव करने में बहुत सहायता करती है और झाड़ियों के अनुचित फैलाव के बिना पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए से रोकती है जो एक जैविक नियंत्रण का काम करती है।

10. बकरी के मांस तथा वध पर कोई सामाजिक तथा धार्मिक प्रतिबन्ध नहीं है। इसी वजह से इसे सभी जातिव धर्म के लोग पाल सकती हैं।

11. वध मांस साफ आसानी से किया जा सकता है। इससे पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं पहुंचता है।

12. बकरी का मांस सबसे महंगा बिकता है क्योंकि इसमें कोलेस्ट्रॉल कम होता है। मांस में कुल वसा की मात्रा 2-4 प्रतिशत तथा कुल फास्फोरस 10.65 मि.ग्रा./ग्राम पाई गयी है। बकरी के मांस में अच्छे वसा की मात्रा 70 प्रतिशत है जो कि हृदय रोग एवं मोटापे से ग्रसित मनुष्यों के लिए लाभकारी है। जो बकरियां घासों का सेवन ज्यादा करती है, उनमें अच्छे मास की मात्रा ज्यादा होती है। यह उन लोगों के लिए अच्छा रहता है जो कम ऊर्जा वाला भोजन लेते हैं। विशेष तौर पर गर्मी के मौसम में बकरी का माँस भेड़ की अपेक्षा पसन्त किया जाता है।

13. बकरी का दूध गाय-भैंस के दूध की अपेक्षा आसानी से पच जाता है। क्योंकि इसके वसा के करण छोटे होते हैं। प्राकृतिक रूप समांगीकृत होने के कारण यह भूख को बढ़ाता है और पाचन शक्ति को सुधारता है। बकरी को दूध गाय-भैंस के दूध की तरह एलर्जी नहीं करता। इसमें जीवाणु नाशक तथा फफूंदी नाशक गुण पाये जाते हैं। यह कुछ फफूंदी जनक रोगों को ठीक करता है। बकरी के दूध में टॉरिन अमीनो अम्ल गाय के दूध की अपेक्षा अधिक पाया जाता है। यह एक गन्धक युक्त अमीनो अम्ल का उपापचय क्रिया का एक अन्तिम उत्पाद है। टॉरिन अम्ल भ्रूण की झिल्ली तथा उतकों को स्थायित्व प्रदान करता है जब तक मानव शरीर में टॉरिन का भण्डार है खराब भोजन के बावजूद भी शरीर में कोई कमी नहीं आती है।

14. बकरी भेड़ की अपेक्षा अधिक लाभप्रद होती है।

15. बकरी गरीब लोगों के लिए रोजगार का सर्वोत्तम व्यवसाय है जिसमें कम पूँजी में अधिक लाभ और रोजगार मिलता है। इसे शारीरिक कमजोर, वृद्ध महिलाएं भी कर सकती हैं और अपना जीवन स्तर ऊंचा कर सकते हैं।

Scanned with CamScanner

तकनीकी मार्गदर्शन हेतु आभार

प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

प्रो. (डॉ.) अवधेश प्रताप सिंह

निदेशक, प्रसार शिक्षा
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर

सम्पर्क सूत्र :

डॉ. राजकुमार बेरवाल

प्रभारी अधिकारी, पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़
फोन : 01509-221448

डॉ. अनिल घोड़ेला, मो. 9660669992

Scanned with CamScanner